

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

Surah 26 — Ash-Shu'araa (The Poets) · Meccan · 227 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ طَسَمَ

ता सीन मीम

2

تِلْكَ ءَايَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं

3

لَعَلَّكَ بُخْعٌ ۖ نَفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا ۖ مُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) शायद तुम (इस फिक्र में) अपनी जान हलाक कर डालोगे कि ये (कुफ़ार) मोमिन क्यों नहीं हो जाते

4

إِنْ نَشَأْ نُنْزِلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَاءِ ءَايَةً ۖ فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خَاضِعِينَ

अगर हम चाहें तो उन लोगों पर आसमान से कोई ऐसा मौजिज़ा नाज़िल करें कि उन लोगों की गर्दन उससे सामने झुक जाएँ

5

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ ۖ مِّنَ الرَّحْمَنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا ۖ عَنْهُ مُعْرِضِينَ

और (लोगों का क़ायदा है कि) जब उनके पास कोई कोई नसीहत की बात खुदा की तरफ से आयी तो ये लोग उससे मुँह फेरे बग़ैर नहीं रहे

6

فَقَدْ كَذَّبُوا ۖ فَسَيَأْتِيهِمْ أَنۢبَاءُ ۖ مَا كَانُوا ۖ بِهِ ۖ يَسْتَهْزِءُونَ

उन लोगों ने झुठलाया ज़रूर तो अनक़रीब ही (उन्हें) इस (अज़ाब) की हकीकत मालूम हो जाएगी जिसकी ये लोग हँसी उड़ाया करते थे

7

أَوَلَمْ يَرَوْا[ۙ] إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْزَلْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ[ۙ] كَرِيمٍ

क्या इन लोगों ने ज़मीन की तरफ भी (गौर से) नहीं देखा कि हमने हर रंग की उम्दा उम्दा चीजें उसमें किस कसरत से उगायी हैं

8

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً[ۙ] [ۙ] وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

यकीनन इसमें (भी कुदरत) खुदा की एक बड़ी निशानी है मगर उनमें से अक्सर ईमान लाने वाले ही नहीं

9

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार यकीनन (हर चीज़ पर) ग़ालिब (और) मेहरबान है

10

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰٓ أَنْ أَنتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

(ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने मूसा को आवाज़ दी कि (इन) ज़ालिमों फिरौन की क्रौम के पास जाओ (हिदायत करो)

11

قَوْمَ فِرْعَوْنَ[ۙ] [ۙ] أَلَا يَتَّقُونَ

क्या ये लोग (मेरे ग़ज़ब से) डरते नहीं हैं

12

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ

मूसा ने अर्ज़ कि परवरदिगार मैं डरता हूँ कि (मुबादा) वह लोग मुझे झुठला दे

13

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَرُونَ

और (उनके झुठलाने से) मेरा दम रुक जाए और मेरी ज़बान (अच्छी तरह) न चले तो हारुन के पास पैग़ाम भेज दे (कि मेरा साथ दे)

14

وَلَهُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكَ[ۙ] [ۙ] ب[ۙ] فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ

(और इसके अलावा) उनका मेरे सर एक जुर्म भी है (कि मैंने एक शख्स को मार डाला था)

15

قَالَ كَلَّا ۖ فَآذِهِبَا بَأْيَتِنَا ۚ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ

तो मैं डरता हूँ कि (शायद) मुझे ये लाग मार डालें खुदा ने कहा हरगिज़ नहीं अच्छा तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ हैं

16

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ

और (सारी गुफ्तगू) अच्छी तरह सुनते हैं गरज़ तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ और कह दो कि हम सारे जहाँन के परवरदिगार के रसूल हैं (और पैग़ाम लाएँ हैं)

17

أَنْ أَرْسِلَ مَعَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ

कि आप बनी इसराइल को हमारे साथ भेज दीजिए

18

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِيدًا ۚ وَلَبِثْتَ فِينَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِينَ

(चुनान्चे मूसा गए और कहा) फिरऔन बोला (मूसा) क्या हमने तुम्हें यहाँ रख कर बचपने में तुम्हारी परवरिश नहीं की और तुम अपनी उम्र से बरसों हम मे रह सह चुके हो

19

وَفَعَلْتَ فَعَلَتِكَ الَّتِي فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ

और तुम अपना वह काम (खून क्रिब्ती) जो कर गए और तुम (बड़े) नाशुक्रे हो

20

قَالَ فَعَلْتُهَا إِذْ ۖ أَنَا ۚ وَأَنَا ۚ مِنَ الضَّالِّينَ

मूसा ने कहा (हाँ) मैंने उस वक्त उस काम को किया जब मैं हालते ग़फ़लत में था

21

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِي رَبِّي حُكْمًا ۚ وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ

फिर जब मैं आप लोगों से डरा तो भाग खड़ा हुआ फिर (कुछ अरसे के बाद) मेरे परवरदिगार ने मुझे नुबूवत अता फरमायी और मुझे भी एक पैग़ाम्बर बनाया

22

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ ۚ تَمُنُّهَا عَلَىٰ أَنْ عَبَّدَتْ بَنِي إِسْرَءِيلَ

और ये भी कोई एहसान है जिसे आप मुझ पर जता रहे हैं कि आप ने बनी इसराईल को गुलाम बना रखा है

23

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ

फिरऔन ने पूछा (अच्छा ये तो बताओ) रब्बुल आलमीन क्या चीज़ है

24

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ

मूसा ने कहाँ सारे आसमान व ज़मीन का और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है (सबका) मालिक अगर आप लोग यक़ीन कीजिए (तो काफी है)

25

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهُ ۚ أَلَا تَسْتَمِعُونَ

फिरऔन ने उन लोगो से जो उसके इर्द गिर्द (बैठे) थे कहा क्या तुम लोग नहीं सुनते हो

26

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ

मूसा ने कहा (वही खुदा जो कि) तुम्हारा परवरदिगार और तुम्हारे बाप दादाओं का परवरदिगार है

27

قَالَ إِنْ رَسُولُكُمُ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُونٌ ۚ

फिरऔन ने कहा (लोगों) ये रसूल जो तुम्हारे पास भेजा गया है हो न हो दीवाना है

28

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ

मूसा ने कहा (वह खुदा जो) पूरब पश्चिम और जो कुछ इन दोनों के दरमियान (सबका) मालिक है अगर तुम समझते हो (तो यही काफी है)

29

قَالَ لَئِنْ آتَخَذْتَ إِلَٰهًا غَيْرِي لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُونِينَ

फिरऔन ने कहा अगर तुम मेरे सिवा किसी और को (अपना) खुदा बनाया है तो मैं ज़रूर तुम्हें कैदी बनाऊँगा

30

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ۚ

मूसा ने कहा अगरचे मैं आपको एक वाजेए व रौशन मौजिज़ा भी दिखाऊ (तो भी)

31

قَالَ فَأْتِ بِهِ ۚ إِنَّ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ

फिरऔन ने कहा (अच्छा) तो तुम अगर (अपने दावे में) सच्चे हो तो ला दिखाओ

32

فَأَلْقَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ۚ

बस (ये सुनते ही) मूसा ने अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दी फिर तो यकायक वह एक सरीही अज़दहा बन गया

33

وَنَزَعَ يَدَهُ ۚ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنُّظَرِیْنَ

और (जेब से) अपना हाथ बाहर निकाला तो यकायक देखने वालों के वास्ते बहुत सफेद चमकदार था

34

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ ۙ إِنَّ هَٰذَا لَسِحْرٌ عَلَیْمٌ ۚ

(इस पर) फिरऔन अपने दरबारियों से जो उसके गिर्द (बैठे) थे कहने लगा

35

یُرِیدُ أَنْ يُخْرِجَکُمْ مِّنْ أَرْضِکُمْ بِسِحْرِهِ ۚ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ

कि ये तो यक्रीनी बड़ा खिलाड़ी जादूगर है ये तो चाहता है कि अपने जादू के ज़ोर से तुम्हें तुम्हारे मुल्क से बाहर निकाल दे तो तुम लोग क्या हुक्म लगाते हो

36

قَالُوا ۚ أَرْجَاهُ وَأَخَاهُ وَأُبْعَثْ فِی الْمَدَآئِنِ حٰشِرِیْنَ

दरबारियों ने कहा अभी इसको और इसके भाई को (चन्द) मोहलत दीजिए

37

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلَیْمٍ ۚ

और तमाम शहरों में जादूगरों के जमा करने को हरकारे खाना कीजिए कि वह लोग तमाम बड़े बड़े खिलाड़ी जादूगरों की आपके सामने ला हाज़िर करें

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ ۖ مَّعْلُومٍ ۚ

गरज्ज वक्ते मुकर्रर हुआ सब जादूगर उस मुकर्रर के वायदे पर जमा किए गए

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُجْتَمِعُونَ

और लोगों में मुनादी करा दी गयी कि तुम लोग अब भी जमा होगे

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا ۚ هُمْ الْغَالِبِينَ

या नहीं ताकि अगर जादूगर गालिब और वर है तो हम लोग उनकी पैरवी करें

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا ۚ لِفِرْعَوْنَ أَئِنْ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ

अलगरज जब सब जादूगर आ गये तो जादूगरों ने फिरऔन से कहा कि अगर हम गालिब आ गए तो हमको यकीनन कुछ इनाम (सरकार से) मिलेगा

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا ۚ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ

फिरऔन ने कहा हा (जरूर मिलेगा) और (इनाम क्या चीज़ है) तुम उस वक्त (मेरे) मुकररेबीन (बारगाह) से हो गए

قَالَ لَهُمُ مُوسَىٰ أَلْقُوا ۚ مَا أَنْتُمْ مُلْقُونَ

मूसा ने जादूगरों से कहा (मंत्र व तंत्र) जो कुछ तुम्हें फेंकना हो फेंको

فَأَلْقُوا ۚ حِبَالُهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا ۚ بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ

इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी छड़ियाँ (मैदान में) डाल दी और कहने लगे फिरऔन के जलाल की क़सम हम ही जरूर गालिब रहेंगे

فَأَلْقَىٰ مُوسَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ

तब मूसा ने अपनी छड़ी डाली तो जादूगरों ने जो कुछ (शोबदे) बनाए थे उसको वह निगलने लगी

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ

ये देखते ही जादूगर लोग सजदे में (मूसा के सामने) गिर पड़े

قَالُوا ۖ ءَامَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

और कहने लगे हम सारे जहाँ के परवरदिगार पर ईमान लाए

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ

जो मूसा और हारून का परवरदिगार है

قَالَ ءَامَنْتُمْ لَهُ ۖ قَبْلَ أَنْ ءَاذَنَ لَكُمْ ۖ إِنَّهُ ۖ لَكَبِيرُكُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ فَلَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۖ لَا قُطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلُكُمْ مِّنْ خَلْفٍ ۖ وَلَا صَلِّبَنَكُمْ أَجْمَعِينَ

फिरऔन ने कहा (हाए) कबल इसके कि मै तुम्हें इजाज़त दूँ तुम इस पर ईमान ले आए बेशक ये तुम्हारा बड़ा (गुरु है जिसने तुम सबको जादू सिखाया है तो खैर) अभी तुम लोगों को (इसका नतीजा) मालूम हो जाएगा कि हम यकीनन तुम्हारे एक तरफ के हाथ और दूसरी तरफ के पाँव काट डालेंगे और तुम सब के सब को सूली देंगे

قَالُوا ۖ لَا ضَيْرَ ۖ إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ

वह बोले कुछ परवाह नहीं हमको तो बहरहाल अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَتَنَا أَن كُنَّا أَوَّلَ الْمُؤْمِنِينَ

हम चँकि सबसे पहले ईमान लाए हैं इसलिए ये उम्मीद रखते हैं कि हमारा परवरदिगार हमारी खताएँ माफ कर देगा

ۖ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي ۖ إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ

और हमने मूसा के पास वही भेजी कि तुम मेरे बन्दों को लेकर रातों रात निकल जाओ क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जाएगा

53

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ

तब फिरऔन ने (लश्कर जमा करने के ख्याल से) तमाम शहरों में (धड़ा धड़) हरकारे खाना किए

54

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَشِرْذِمَةٌ ۖ قَلِيلُونَ

(और कहा) कि ये लोग मूसा के साथ बनी इसराइल थोड़ी सी (मुट्ठी भर की) जमाअत हैं

55

وَأَنَّهُمْ لَنَا لَغَائِظُونَ

और उन लोगों ने हमें सख्त गुस्सा दिलाया है

56

وَأَنَا لَجَمِيعٌ حَذِرُونَ

और हम सबके सब बा साज़ों सामान हैं

57

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِّنْ جَنَّتٍ ۖ وَعُيُونٍ ۖ

(तुम भी आ जाओ कि सब मिलकर ताअककुब (पीछा) करें)

58

وَكُنُوزٍ ۖ وَمَقَامٍ ۖ كَرِيمٍ ۖ

गरज़ हमने इन लोगों को (मिस्र के) बागों और चशमों और खज़ानों और इज्जत की जगह से (यूँ) निकाल बाहर किया

59

كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَءِيلَ

(और जो नाफरमानी करे) इसी तरह सज़ा होगी और आखिर हमने उन्हीं चीज़ों का मालिक बनी इसराइल को बनाया

60

فَاتَّبَعُوهُمْ مُّشْرِقِينَ

गरज़ (मूसा) तो रात ही को चले गए

61

فَلَمَّا تَرَأَ الْجَمْعَانِ قَالَ أَصْحَبُ مُوسَى إِنَّا لَمُدْرِكُونَ

और उन लोगों ने सूरज निकलते उनका पीछा किया तो जब दोनों जमाअतें (इतनी करीब हुयीं कि) एक दूसरे को देखने लगी तो मूसा के साथी (हैरान होकर) कहने लगे

62

قَالَ كَلَّا ۖ إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ

कि अब तो पकड़े गए मूसा ने कहा हरगिज़ नहीं क्योंकि मेरे साथ मेरा परवरदिगार है

63

فَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ ۖ كَالطُّوْدِ الْعَظِيمِ

वह फौरन मुझे कोई (मुखलिसी का) रास्ता बता देगा तो हमने मूसा के पास वही भेजी कि अपनी छड़ी दरिया पर मारो (मारना था कि) फौरन दरिया फुट के टुकड़े टुकड़े हो गया तो गोया हर टुकड़ा एक बड़ा ऊँचा पहाड़ था

64

وَأَزَلَفْنَا ثُمَّ الْآخَرِينَ

और हमने उसी जगह दूसरे फरीक (फिरऔन के साथी) को करीब कर दिया

65

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَّعَهُ ۖ أَجْمَعِينَ

और मूसा और उसके साथियों को हमने (डूबने से) बचा लिया

66

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ

फिर दूसरे फरीक (फिरऔन और उसके साथियों) को डुबोकर हलाक कर दिया

67

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ

बेशक इसमें यकीनन एक बड़ी इबरत है और उनमें अक्सर ईमान लाने वाले ही न थे

68

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमें तो शक ही न था कि तुम्हारा परवरदिगार यकीनन (सब पर) ग़ालिब और बड़ा मेहरबान है

69

وَأَتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرَاهِيمَ

और (ऐ रसूल) उन लोगों के सामने इबराहीम का किस्सा बयान करें

70

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ ۖ مَا تَعْبُدُونَ

जब उन्होंने अपने (मुँह बोले) बाप और अपनी क्रौम से कहा

71

قَالُوا ۖ نَعْبُدُ أَصْنَامًا ۖ فَنَنْزِلُ لَهَا عَڪِفِينَ

कि तुम लोग किसकी इबादत करते हो तो वह बोले हम बुतों की इबादत करते हैं और उन्हीं के मुजाविर बन जाते हैं

72

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُمُ إِذْ تَدْعُونَ

इबराहीम ने कहा भला जब तुम लोग उन्हें पुकारते हो तो वह तुम्हारी कुछ सुनते हैं

73

أَوْ يَنْفَعُونَكُمُ أَوْ يَضُرُّونَ

या तम्हें कुछ नफा या नुकसान पहुँचा सकते हैं

74

قَالُوا ۖ بَلْ وَجَدْنَا ءَابَاءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُونَ

कहने लगे (कि ये सब तो कुछ नहीं) बल्कि हमने अपने बाप दादाओं को ऐसा ही करते पाया है

75

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ

इबराहीम ने कहा क्या तुमने देखा भी कि जिन चीज़ों की तुम परसतिश करते हो

76

أَنْتُمْ وَعَابَاؤُكُمْ الْأَقْدَمُونَ

या तुम्हारे अगले बाप दादा (करते थे) ये सब मेरे यक़ीनी दुश्मन हैं

77

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّي إِلَّا رَبَّ الْعَالَمِينَ

मगर सारे जहाँ का पालने वाला जिसने मुझे पैदा किया (वही मेरा दोस्त है)

78

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِ

फिर वही मेरी हिदायत करता है

79

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِ

और वह शख्स जो मुझे (खाना) खिलाता है और मुझे (पानी) पिलाता है

80

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِ

और जब बीमार पड़ता हूँ तो वही मुझे शिफा इनायत फरमाता है

81

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِ

और वह वही है जो मुझे मार डालेगा और उसके बाद (फिर) मुझे ज़िन्दा करेगा

82

وَالَّذِي أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ

और वह वही है जिससे मैं उम्मीद रखता हूँ कि क़यामत के दिन मेरी ख़ताओं को बख़्श देगा

83

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا ۖ وَالْحَقِّنِي بِالصَّالِحِينَ

परवरदिगार मुझे इल्म व फहम अता फरमा और मुझे नेकों के साथ शामिल कर

84

وَأَجْعَلْ لِّي لِسَانَ صِدْقٍ ۚ فِي آلاءِ آخِرِينَ

और आइन्दा आने वाली नस्लों में मेरा ज़िक्र खैर कायम रख

85

وَأَجْعَلْنِي مِنْ وَرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيمِ

और मुझे भी नेअमत के बाग़ (बेहश्त) के वारिसों में से बना

86

وَأُغْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ ۚ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ

और मेरे (मुँह बोले) बाप (चचा आज़र) को बख़्श दे क्योंकि वह गुमराहों में से है

87

وَلَا تُخْزِنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ

और जिस दिन लोग कब्रों से उठाए जाएँगे मुझे रुसवा न करना

88

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ ۚ وَلَا بَنُونَ

जिस दिन न तो माल ही कुछ काम आएगा और न लड़के बाले

89

إِلَّا مَنْ أَتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ ۚ سَلِيمٍ

मगर जो शख्स खुदा के सामने (गुनाहों से) पाक दिल लिए हुए हाज़िर होगा (वह फायदे में रहेगा)

90

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ

और बेहश्त परहेज़ गारों के करीब कर दी जाएगी

91

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِلْغَاوِينَ

और दोज़ख़ गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी

92

وَقِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ

और उन लोगों (अहले जहन्नुम) से पूछा जाएगा कि खुदा को छोड़कर जिनकी तुम परसतिश करते थे (आज) वह कहाँ हैं

93

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُم أَوْ يَنْتَصِرُونَ

क्या वह तुम्हारी कुछ मदद कर सकते हैं या वह खुद अपनी आप बाहम मदद कर सकते हैं

94

فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ

फिर वह (माबूद) और गुमराह लोग और शैतान का लशकर

95

وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ

(गरज़ सबके सब) जहन्नुम में औधे मुँह ढकेल दिए जाएँगे

96

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ

और ये लोग जहन्नुम में बाहम झगड़ा करेंगे और अपने माबूद से कहेंगे

97

تَاللَّهِ إِن كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ

खुदा की कसम हम लोग तो यक्रीनन सरीही गुमराही में थे

98

إِذْ نُسَوِّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ

कि हम तुम को सारे जहाँ के पालने वाले (खुदा) के बराबर समझते रहे

99

وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ

और हमको बस (उन) गुनाहगारों ने (जो मुझसे पहले हुए) गुमराह किया

100

فَمَا لَنَا مِنْ شُفَعِينَ

तो अब तो न कोई (साहब) मेरी सिफारिश करने वाले हैं

101

وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ^१

और न कोई दिलबन्द दोस्त हैं

102

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً^१ فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

तो काश हमें अब दुनिया में दोबारा जाने का मौक़ा मिलता तो हम (ज़रूर) ईमान वालों से होते

103

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً^१ ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

इबराहीम के इस किस्से में भी यक़ीनन एक बड़ी इबरत है और इनमें से अक्सर ईमान लाने वाले थे भी नहीं

104

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) ग़ालिब और बड़ा मेहरबान है

105

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ

(यूँ ही) नूह की क़ौम ने पैग़म्बरो को झुठलाया

106

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ

कि जब उनसे उन के भाई नूह ने कहा कि तुम लोग (खुदा से) क्यों नहीं डरते मैं तो तुम्हारा यक़ीनी अमानत दार पैग़म्बर हूँ

107

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ^१

तुम खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

108

فَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا

और मैं इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ उजरत तो माँगता नहीं

109

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ

मेरी उजरत तो बस सारे जहाँ के पालने वाले खुदा पर है

110

فَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो वह लोग बोले जब कमीनो मज़दूरों वग़ैरह ने (लालच से) तुम्हारी पैरवी कर ली है

111

ۚ قَالُوا ۚ أَتُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ

तो हम तुम पर क्या ईमान लाएं

112

قَالَ وَمَا عَلِمِي بِمَا كَانُوا ۚ يَعْمَلُونَ

नूह ने कहा ये लोग जो कुछ करते थे मुझे क्या खबर (और क्या गरज़)

113

إِنِ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَى رَبِّي ۚ لَوْ تَشْعُرُونَ

इन लोगों का हिसाब तो मेरे परवरदिगार के ज़िम्मे है

114

وَمَا أَنَا ۚ بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ

काश तुम (इतनी) समझ रखते और मैं तो ईमानदारों को अपने पास से निकालने वाला नहीं

115

إِنِ أَنَا ۚ إِلَّا نَذِيرٌ ۚ مُّبِينٌ ۚ

मैं तो सिर्फ़ (अज़ाबे खुदा से) साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ

116

قَالُوا ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَنُوحُ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ

वह लोग कहने लगे ऐ नूह अगर तुम अपनी हरकत से बाज़ न आओगे तो ज़रूर संगसार कर दिए जाओगे

117

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ

नूह ने अर्ज की परवरदिगार मेरी क्रौम ने यक़ीनन मुझे झुठलाया

118

فَأَفْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا ۖ وَنَجِّنِي وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

तो अब तू मेरे और इन लोगों के दरमियान एक क़तई फैसला कर दे और मुझे और जो मोमिनीन मेरे साथ हैं उनको नजात दे

119

فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ ۖ فِي الْفُلِّ الْمَشْحُونِ

गरज़ हमने नूह और उनके साथियों को जो भरी हुई कश्ती में थे नजात दी

120

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ

फिर उसके बाद हमने बाक़ी लोगों को शरक कर दिया

121

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ

बेशक इसमें भी यक़ीनन बड़ी इबरत है और उनमें से बहुतेरे ईमान लाने वाले ही न थे

122

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) शालिब मेहरबान है

123

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ

(इसी तरह क्रौम) आद ने पैग़म्बरों को झुठलाया

124

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ

जब उनके भाई हूद ने उनसे कहा कि तुम खुदा से क्यों नहीं डरते

125

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ؟

मैं तो यकीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ

126

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

127

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ

मैं तो तुम से इस (तबलीगे रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी उजरत तो बस सारी खुदायी के पालने वाले (खुदा) पर है

128

أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ ءَايَةً؟ تَعْبَثُونَ

तो क्या तुम ऊँची जगह पर बेकार यादगारे बनाते फिरते हो

129

وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ

और बड़े बड़े महल तामीर करते हो गोया तुम हमेशा (यहीं) रहोगे

130

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ

और जब तुम (किसी पर) हाथ डालते हो तो सरकशी से हाथ डालते हो

131

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो तुम खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

132

وَاتَّقُوا ۚ الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ

और उस शख्स से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जिन्हें तुम खूब जानते हो

133

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَمٍ ۚ وَبَنِينَ

अच्छा सुनो उसने तुम्हारे चार पायों और लड़के बालों वगैरह और चश्मों से मदद की

134

وَجَنَّتِ ۚ وَعُيُونٍ

मै तो यक़ीनन तुम पर

135

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ

एक बड़े (सख्त) रोज़ के अज़ाब से डरता हूँ

136

قَالُوا ۚ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَعِظِينَ

वह लोग कहने लगे ख्वाह तुम नसीहत करो या न नसीहत करो हमारे वास्ते (सब) बराबर है

137

إِنْ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ

ये (डरावा) तो बस अगले लोगों की आदत है

138

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذِّبِينَ

हालाँकि हम पर अज़ाब (वगैरह अब) किया नहीं जाएगा

139

فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

गरज़ उन लोगों ने हूद को झुठला दिया तो हमने भी उनको हलाक कर डाला बेशक इस वाक़िये में यक़ीनी एक बड़ी इबरत है
आर उनमें से बहुतेरे ईमान लाने वाले भी न थे

140

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमें शक नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यकीनन (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है

141

كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ

(इसी तरह क्रौम) समूद ने पैग़म्बरों को झुठलाया

142

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ

जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि तुम (खुदा से) क्यों नहीं डरते

143

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ

मैं तो यकीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ

144

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

145

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ

और मैं तो तुमसे इस (तबलीगे रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता- मेरी मज़दूरी तो बस सारी खुदाई के पालने वाले (खुदा पर है)

146

أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هُمْ بِءَامِنِينَ

क्या जो चीजें यहाँ (दुनिया में) मौजूद हैं

147

فِي جَنَّتٍ ۖ وَعُيُونٍ

बाग़ और चश्में और खेतिया और छुहारे जिनकी कलियाँ लतीफ़ व नाज़ुक होती हैं

وَزُرُوعٍ ۚ وَنَخْلٍ ۚ طَلْعَهَا هَضِيمٌ ۚ

उन्हीं में तुम लोग इतमिनान से (हमेशा के लिए) छोड़ दिए जाओगे

وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا ۖ فَرِهِينَ

और (इस वजह से) पूरी महारत और तकलीफ के साथ पहाड़ों को काट काट कर घर बनाते हो

فَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

وَلَا تُطِيعُوا ۚ أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ

और ज्यादाती करने वालों का कहा न मानों

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ

जो रुए ज़मीन पर फ़साद फैलाया करते हैं और (ख़राबियों की) इसलाह नहीं करते

قَالُوا ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ

वह लोग बोले कि तुम पर तो बस जादू कर दिया गया है (कि ऐसी बातें करते हो)

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ ۚ مِثْلُنَا فَأْتِ بَآيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

तुम भी तो आखिर हमारे ही ऐसे आदमी हो पस अगर तुम सच्चे हो तो कोई मौजिज़ा हमारे पास ला (दिखाओ)

قَالَ هَذِهِ ۚ نَاقَةٌ ۚ لَهَا شِرْبٌ ۚ وَلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ ۚ مَّعْلُومٍ ۚ

सालेह ने कहा- यही ऊँटनी (मौजिज़ा) है एक बारी इसके पानी पीने की है और एक मुक़रर दिन तुम्हारे पीने का

156

وَلَا تَمْسُوْهَا بِسُوْءٍ ۚ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۚ

और इसको कोई तकलीफ़ न पहुँचाना वरना एक बड़े (सख्त) ज़ोर का अज़ाब तुम्हे ले डालेगा

157

فَعَقَرُوْهَا فَأَصْبَحُوا ۚ نَدَمِيْنَ

इस पर भी उन लोगों ने उसके पाँव काट डाले और (उसको मार डाला) फिर खुद पशेमान हुए

158

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ۚ إِنَّ فِيْ ذَٰلِكَ لَآيَةً ۚ ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

फिर उन्हें अज़ाब ने ले डाला-बेशक इसमें यक़ीनन एक बड़ी इब्रत है और इनमें के बहुतेरे ईमान लाने वाले भी न थे

159

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ

और इसमें शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार (सब पर) ग़ालिब और मेहरबान है

160

كَذَّبَتْ قَوْمٌ لُّوطٌ الْمُرْسَلِيْنَ

इसी तरह लूत की क्रौम ने पैग़म्बरों को झुठलाया

161

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ

जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा कि तुम (खुदा से) क्यों नहीं डरते

162

إِنِّي لَكُمْ رَّسُوْلٌ ۖ أَمِيْنٌ ۚ

मैं तो यक़ीनन तुम्हारा अमानतदार पैग़म्बर हूँ तो खुदा से डरो

163

فَاتَّقُوا ۚ اَللّٰهَ وَاَطِيعُوْنَ

और मेरी इताअत करो

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ

और मैं तो तुमसे इस (तबलीगे रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस सारी खुदायी के पालने वाले (खुदा) पर है

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ

क्या तुम लोग (शहवत परस्ती के लिए) सारे जहाँ के लोगों में मर्दों ही के पास जाते हो

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ

और तुम्हारे वास्ते जो बीवियाँ तुम्हारे परवरदिगार ने पैदा की है उन्हें छोड़ देते हो (ये कुछ नहीं) बल्कि तुम लोग हद से गुज़र जाने वाले आदमी हो

قَالُوا ۖ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَلُوطُ لَتَكُونَ مِنَ الْمُخْرَجِينَ

उन लोगों ने कहा ऐ लूत अगर तुम बाज़ न आओगे तो तुम ज़रूर निकल बाहर कर दिए जाओगे

قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ

लूत ने कहा मैं यकीनन तुम्हारी (नाशाइसता) हरकत से बेज़ार हूँ

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ

(और दुआ की) परवरदिगार जो कुछ ये लोग करते है उससे मुझे और मेरे लड़कों को नजात दे

فَنَجِّئُهُ وَأَهْلَهُ ۚ أَجْمَعِينَ

तो हमने उनको और उनके सब लड़कों को नजात दी

إِلَّا عَجُوزًا ۚ فِي الْغَابِرِينَ

मगर (लूत की) बूढ़ी औरत कि वह पीछे रह गयी

ثُمَّ دَمَرْنَا آلَآخَرِينَ

(और हलाक हो गयी) फिर हमने उन लोगों को हलाक कर डाला

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۚ فَسَاءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِينَ

और उन पर हमने (पत्थरों का) मेंह बरसाया तो जिन लोगों को (अज़ाबे खुदा से) डराया गया था

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

उन पर क्या बड़ी बारिश हुई इस वाकिये में भी एक बड़ी इबरत है और इनमें से बहुतेरे ईमान लाने वाले ही न थे

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और इसमे तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार यकीनन सब पर ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है

كَذَّبَ أَصْحَابُ لَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ

इसी तरह जंगल के रहने वालों ने (मेरे) पैग़म्बरों को झुठलाया

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ

जब शुएब ने उनसे कहा कि तुम (खुदा से) क्यों नहीं डरते

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۚ

मैं तो बिला शुबाह तुम्हारा अमानदार हूँ

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا

तो खुदा से डरो और मेरी इताअत करो

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ

मैं तो तुमसे इस (तबलीग़े रिसालत) पर कुछ मज़दूरी भी नहीं माँगता मेरी मज़दूरी तो बस सारी खुदाई के पालने वाले (खुदा) के ज़िम्मे है

ۚ أَوْفُوا ۚ الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا ۚ مِنَ الْمُخْسِرِينَ

तुम (जब कोई चीज़ नाप कर दो तो) पूरा पैमाना दिया करो और नुक़सान (कम देने वाले) न बनो

وَزِنُوا ۚ بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ

और तुम (जब तौलो तो) ठीक तराज़ू से डन्डी सीधी रखकर तौलो

وَلَا تَبْخَسُوا ۚ النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا ۚ فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ

और लोगों को उनकी चीज़े (जो ख़रीदें) कम न ज्यादा करो और ज़मीन से फ़साद न फैलाते फ़िरो

وَاتَّقُوا ۚ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأُولِينَ

और उस (खुदा) से डरो जिसने तुम्हे और अगली ख़िलकत को पैदा किया

قَالُوا ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ

वह लोग कहने लगे तुम पर तो बस जादू कर दिया गया है (कि ऐसी बातें करते हों)

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ ۖ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ

और तुम तो हमारे ही ऐसे एक आदमी हो और हम लोग तो तुमको झूठा ही समझते हैं

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا ۖ مِّنَ السَّمَاءِ ۖ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ

तो अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आसमान का एक टुकड़ा गिरा दो

قَالَ رَبِّيَ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ

और शुएब ने कहा जो तुम लोग करते हो मेरा परवरदिगार खूब जानता है

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ ۚ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ

गरज उन लोगों ने शुएब को झुठलाया तो उन्हें साएबान (अब्र) के अज़ाब ने ले डाला- इसमें शक नहीं कि ये भी एक बड़े (सख्त) दिन का अज़ाब था

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ

इसमें भी शक नहीं कि इसमें (समझदारों के लिए) एक बड़ी इब्रत है और उनमें के बहुतेरे ईमान लाने वाले ही न थे

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ

और बेशक तुम्हारा परवरदिगार यकीनन (सब पर) ग़ालिब (और) बड़ा मेहरबान है

وَإِنَّهُ ۚ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَلَمِينَ

और (ऐ रसूल) बेशक ये (कुरान) सारी खुदायी के पालने वाले (खुदा) का उतारा हुआ है

نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ

जिसे रुहुल अमीन (जिबरील) साफ़ अरबी ज़बान में लेकर तुम्हारे दिल पर नाज़िल हुए है

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ

ताकि तुम भी और पैग़म्बरों की तरह

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ۚ

लोगों को अज़ाबे खुदा से डराओ

وَإِنَّهُ ۚ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ

और बेशक इसकी खबर अगले पैग़म्बरों की किताबों में (भी मौजूद) है

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ ءَايَةٌ أَن يَعْلَمَهُ ۚ عُلَمَآءُ بَنِي إِسْرَءِيلَ

क्या उनके लिए ये कोई (काफ़ी) निशानी नहीं है कि इसको उलेमा बनी इसराइल जानते हैं

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ

और अगर हम इस कुरान को किसी दूसरी ज़बान वाले पर नाज़िल करते

فَقَرَأَهُ ۚ عَلَيْهِم مَّا كَانُوا ۚ بِهِ ۚ مُؤْمِنِينَ

और वह उन अरबों के सामने उसको पढ़ता तो भी ये लोग उस पर ईमान लाने वाले न थे

كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ

इसी तरह हमने (गोया खुद) इस इन्कार को गुनाहगारों के दिलों में राह दी

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ حَتَّىٰ يَرَوْا ۚ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ

ये लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब को न देख लेंगे उस पर ईमान न लाएँगे

فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ

कि वह यकायक इस हालत में उन पर आ पड़ेगा कि उन्हें खबर भी न होगी

فَيَقُولُوا ۚ هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُونَ

(मगर जब अज़ाब नाज़िल होगा) तो वह लोग कहेंगे कि क्या हमें (इस वक्त कुछ) मोहलत मिल सकती है

204

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ

तो क्या ये लोग हमारे अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं

205

أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ

तो क्या तुमने ग़ौर किया कि अगर हम उनको सालो साल चैन करने दे

206

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا^१ يُوعَدُونَ

उसके बाद जिस (अज़ाब) का उनसे वायदा किया जाता है उनके पास आ पहुँचे

207

مَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا^१ يُمَتَّعُونَ

तो जिन चीज़ों से ये लोग चैन किया करते थे कुछ भी काम न आएँगी

208

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ

और हमने किसी बस्ती को बग़ैर उसके हलाक नहीं किया कि उसके समझाने को (पहले से) डराने वाले (पैग़म्बर भेज दिए) थे

209

ذَكَرَىٰ وَمَا كُنَّا ظَالِمِينَ

और हम ज़ालिम नहीं हैं

210

وَمَا تَنْزَلَتْ بِهِ الشَّيَاطِينُ

और इस कुरान को शयातीन लेकर नाज़िल नहीं हुए

211

وَمَا يَنْد^१ بِغَىٰ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيعُونَ

और ये काम न तो उनके लिए मुनासिब था और न वह कर सकते थे

212

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمْعَزُولُونَ

बल्कि वह तो (वही के) सुनने से महरूम हैं

213

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ

(ऐ रसूल) तुम खुदा के साथ किसी दूसरे माबूद की इबादत न करो वरना तुम भी मुबतिलाए अज़ाब किए जाओगे

214

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ

और (ऐ रसूल) तुम अपने करीबी रिश्तेदारों को (अज़ाबे खुदा से) डराओ

215

وَأَخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

और जो मोमिनीन तुम्हारे पैरो हो गए हैं उनके सामने अपना बाजू झुकाओ

216

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنَّي بِرِيءٍۙ مِمَّا تَعْمَلُونَ

(तो वाज़ेए करो) पस अगर लोग तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो तुम (साफ़ साफ़) कह दो कि मैं तुम्हारे करतूतों से बरी उज़ ज़िम्मा
रही

217

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ

और तुम उस (खुदा) पर जो सबसे (ग़ालिब और) मेहरबान है

218

الَّذِي يَرَبُّكَ حِينَ تَقُومُ

भरोसा रखो कि जब तुम (नमाज़े तहज्जुद में) खड़े होते हो

219

وَتَقْلُبُكَ فِي السُّجْدِينَ

और सजदा

220

إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

करने वालों (की जमाअत) में तुम्हारा फिरना (उठना बैठना सजदा रूकूउ वगैरह सब) देखता है

221

هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلَىٰ مَن تَنَزَّلُ الشَّيَاطِينُ

बेशक वह बड़ा सुनने वाला वाक्किफ़कार है क्या मैं तुम्हें बता दूँ कि शयातीन किन लोगों पर नाज़िल हुआ करते हैं

222

تَنَزَّلُ عَلَىٰ كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۚ

(लो सुनो) ये लोग झूठे बद किरदार पर नाज़िल हुआ करते हैं

223

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْثُرُهُمْ كُذِبُونَ

जो (फ़रिश्तों की बातों पर कान लगाए रहते हैं) कि कुछ सुन पाएँ

224

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۚ

हालाँकि उनमें के अक्सर तो (बिल्कुल) झूठे हैं और शायरों की पैरवी तो गुमराह लोग किया करते हैं

225

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ

क्या तुम नहीं देखते कि ये लोग जंगल जंगल सरगिरदों मारे मारे फिरते हैं

226

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ

और ये लोग ऐसी बातें कहते हैं जो कभी करते नहीं

إِلَّا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا ۚ وَانْتَصَرُوا ۚ مِنْ ۚ
 بَعْدَ مَا ظَلَمُوا ۚ ۚ وَسَيَعْلَمُ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَنْقَلِبُونَ

मगर (हाँ) जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए और कसरत से खुदा का जिक्र किया करते हैं और जब उन पर ज़ुल्म किया जा चुका उसके बाद उन्होंने बदला लिया और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें अनकरीब ही मालूम हो जाएगा कि वह किस जगह लौटाए जाएँगे